समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Sunday, 27 September 2026

महाराष्ट्र उद्योग भूषण पुरस्कार 2026: संघर्ष से सफलता तक श्री बाबुराव नारायण राणे की प्रेरणादायी उद्यमिता यात्रा

admin

Published on 26 Sep 2026

श्री बाबुराव नारायण राणे — मेहनत, जिद्द, परिवार के सहयोग और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ सफलता की कहानी

व्यवसाय की दुनिया में सफलता केवल आर्थिक उपलब्धियों से तय नहीं होती, बल्कि उसके पीछे छिपे संघर्ष, निरंतर मेहनत, कठिन परिस्थितियों में लिए गए निर्णय और अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ विश्वास भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। श्री बाबुराव नारायण राणे का उद्यमिता सफर इसी सोच का एक प्रेरणादायी उदाहरण है।

8 अगस्त 1973 को जन्मे श्री बाबुराव नारायण राणे ने बेहद सामान्य आर्थिक परिस्थितियों से अपने जीवन की शुरुआत की। सीमित संसाधनों और अनेक चुनौतियों के बावजूद उन्होंने परिस्थितियों के सामने हार नहीं मानी। मेहनत, ईमानदारी, आत्मविश्वास और प्रत्येक कार्य को पूरी निष्ठा से करने की आदत ने उनके व्यक्तित्व और भविष्य की उद्यमिता की मजबूत नींव रखी।

पिता की प्रेरणा से मिली आत्मनिर्भर बनने की सीख

श्री राणे के उद्यमिता सफर में उनके पिता का योगदान बेहद महत्वपूर्ण रहा। वर्ष 1999 में उनके पिता का निधन हो गया, लेकिन उससे पहले श्री राणे द्वारा किए गए विभिन्न छोटे-बड़े व्यवसायिक प्रयासों में उन्होंने हमेशा उनका उत्साह बढ़ाया और उनकी क्षमता पर विश्वास जताया।

अपने पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा, मेहनत पर भरोसा रखने की सोच और कठिनाइयों के बावजूद प्रयास जारी रखने की सीख उन्हें अपने पिता से मिली। स्वतंत्र रूप से व्यवसाय खड़ा करने और कुछ अपना बनाने का साहस उनके मन में विकसित करने में उनके पिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

हालांकि मुख्य व्यवसाय शुरू करते समय उनके पिता उनके साथ नहीं थे, लेकिन उनके द्वारा दिए गए संस्कार, प्रेरणा और आत्मनिर्भरता की सोच आज भी श्री राणे के पूरे उद्यमिता सफर का आधार बनी हुई है।

Tata Motors के अनुभव से मिली औद्योगिक समझ

अपना व्यवसाय शुरू करने से पहले श्री बाबुराव नारायण राणे ने Tata Motors में कार्य किया। इस दौरान उन्हें औद्योगिक क्षेत्र के वास्तविक कामकाज को समझने का अवसर मिला।

उत्पादन प्रक्रिया, गुणवत्ता, कार्यशैली, अनुशासन, समय प्रबंधन और ग्राहकों की अपेक्षाओं जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का व्यावहारिक अनुभव उन्हें इसी दौर में प्राप्त हुआ। इस अनुभव ने उनके भीतर स्वयं का उद्योग स्थापित करने का आत्मविश्वास मजबूत किया।

नौकरी से प्राप्त अनुभव को उन्होंने आगे अपने व्यवसायिक सफर में उपयोग किया और धीरे-धीरे एक स्वतंत्र उद्यम खड़ा करने की दिशा में कदम बढ़ाया।

2005-06 मे शुरू हुआ अपना व्यवसाय

आर्थिक वर्ष 2005-06 में श्री राणे ने अपने व्यवसाय की शुरुआत की। शुरुआत आसान नहीं थी। सीमित आर्थिक संसाधन, बाजार में पहचान बनाना, ग्राहकों का विश्वास हासिल करना, आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था करना और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में टिके रहना उनके सामने प्रमुख चुनौतियां थीं।

लेकिन उन्होंने इन परिस्थितियों को अपने रास्ते की रुकावट नहीं बनने दिया।

गुणवत्ता को प्राथमिकता देते हुए, ग्राहकों के साथ भरोसे का संबंध बनाते हुए और लगातार मेहनत करते हुए उन्होंने अपने व्यवसाय का धीरे-धीरे विस्तार किया।

आज उनके व्यवसाय की दो यूनिट्स कार्यरत हैं। इनमें एक यूनिट लगभग **7,000 वर्गफुट** और दूसरी लगभग **32,000 वर्गफुट** क्षेत्रफल में संचालित हो रही है। उनके व्यवसाय की एक आर्थिक वर्ष में लगभग **₹25 करोड़ की टर्नओवर** दर्ज की गई है।

छोटी शुरुआत से इस स्तर तक पहुंचने के पीछे वर्षों की मेहनत, बेहतर नियोजन, जोखिम उठाने का साहस और बदलती परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता महत्वपूर्ण रही है।

परिवार बना सफलता की मजबूत नींव

किसी भी उद्यमी की सफलता के पीछे केवल उसका व्यक्तिगत प्रयास नहीं होता। परिवार का विश्वास और सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। श्री बाबुराव राणे के उद्यमिता सफर में उनके परिवार ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विशेष रूप से उनकी पत्नी का योगदान उल्लेखनीय रहा है। व्यवसाय के शुरुआती दौर में आर्थिक सीमाएं थीं और व्यवसाय में उतार-चढ़ाव भी आते रहे। ऐसे समय में उनकी पत्नी ने परिस्थितियों को धैर्यपूर्वक स्वीकार करते हुए श्री राणे को लगातार मानसिक और पारिवारिक सहयोग दिया।

व्यवसाय के कारण समय की अनिश्चितता, अतिरिक्त जिम्मेदारियां और विभिन्न चुनौतियों के बावजूद उन्होंने परिवार को संभाला और श्री राणे को अपने निर्णयों पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

व्यवसाय में कठिन दौर आने पर निराश होने के बजाय आगे बढ़ने के लिए उनका विश्वास और साथ श्री राणे के लिए महत्वपूर्ण मानसिक शक्ति बना।

मां के आशीर्वाद और बड़े भाइयों का सहयोग

श्री राणे की मां भी उनके पूरे सफर में उनके साथ मजबूती से खड़ी रहीं। मां का आशीर्वाद, प्रोत्साहन और बेटे की क्षमता पर विश्वास उन्हें कठिन समय में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा।

इसके साथ ही उनके बड़े भाइयों ने भी समय-समय पर मार्गदर्शन, सहयोग और आवश्यक सहायता प्रदान की।

इसलिए श्री राणे की सफलता केवल उनकी व्यक्तिगत मेहनत की कहानी नहीं है। इसके पीछे पिता की प्रेरणा, मां का आशीर्वाद, पत्नी का मजबूत साथ और बड़े भाइयों का सहयोग भी महत्वपूर्ण आधार रहा है।

कोविड-19 संकट मे भी नहीं छोड़ा संघर्ष

श्री बाबुराव राणे के औद्योगिक सफर में कोविड-19 महामारी का दौर भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर सामने आया। महामारी के दौरान उद्योग जगत में अनिश्चितता का माहौल था। बाजार में बदलाव, कामकाज में रुकावट और आर्थिक दबाव जैसी परिस्थितियों का प्रभाव व्यवसाय पर भी पड़ा।

ऐसे कठिन समय में उन्होंने हार मानने के बजाय परिस्थितियों को समझते हुए आवश्यक बदलाव स्वीकार किए और व्यवसाय को आगे बढ़ाने का प्रयास जारी रखा।

कोविड काल ने उनके सामने निर्णय लेने की क्षमता, धैर्य और संकटों का सामना करने की मानसिकता की कठिन परीक्षा रखी। इस दौर में भी सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखते हुए उन्होंने अपने व्यवसाय की निरंतरता बनाए रखने पर जोर दिया।

उद्योग के साथ सामाजिक जिम्मेदारी

श्री बाबुराव नारायण राणे की सोच केवल अपने व्यवसाय की प्रगति तक सीमित नहीं रही। उद्योग के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने पर भी उन्होंने ध्यान दिया है।

व्यवसाय के माध्यम से रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर उन्होंने कई परिवारों के आर्थिक जीवन को मजबूत करने में योगदान दिया है।

इसके साथ ही GST और आयकर के माध्यम से शासन को आर्थिक योगदान देते हुए राज्य और देश की अर्थव्यवस्था में भी अपना हिस्सा निभाया है।

सामाजिक स्तर पर जरूरतमंद लोगों की सहायता, विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में सहयोग, वृद्धाश्रमों को सहायता तथा वृक्षारोपण जैसे पर्यावरणपूरक उपक्रमों में सहभागिता के माध्यम से उन्होंने अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को भी बनाए रखा है।

संघर्ष को अवसर मे बंदलने की सोच

श्री बाबुराव राणे की उद्यमिता यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है—कठिन परिस्थितियों के सामने लगातार प्रयास करते रहना।

व्यवसाय शुरू करते समय संसाधन सीमित थे। बाजार में अपनी पहचान बनाना आसान नहीं था। ग्राहकों का विश्वास जीतना और प्रतिस्पर्धा के बीच अपनी जगह बनाना भी चुनौतीपूर्ण था। लेकिन उन्होंने प्रत्येक चुनौती को सीखने और आगे बढ़ने के अवसर के रूप में लिया।

गुणवत्ता, निरंतरता और ग्राहक विश्वास को प्राथमिकता देकर उन्होंने अपने व्यवसाय को धीरे-धीरे विस्तार दिया।

युवाओं और नए उद्यमियों के लिए प्रेरणादायी सफर

श्री बाबुराव नारायण राणे की कहानी उन युवाओं और नए उद्यमियों के लिए प्रेरणा देती है जो सीमित संसाधनों के बावजूद अपना व्यवसाय शुरू करने का सपना देखते हैं।

उनका सफर यह दर्शाता है कि सफलता के लिए हमेशा बड़ी शुरुआत जरूरी नहीं होती। मजबूत इच्छाशक्ति, निरंतर मेहनत, सही निर्णय, जोखिम लेने की क्षमता और कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की आदत किसी भी छोटे प्रयास को बड़े व्यवसाय में बदलने की दिशा दे सकती है।

उनकी यात्रा में नौकरी से प्राप्त औद्योगिक अनुभव, स्वयं का व्यवसाय शुरू करने का साहस, परिवार का सहयोग, ग्राहक विश्वास और सामाजिक जिम्मेदारी—इन सभी पहलुओं का समन्वय दिखाई देता है।

महाराष्ट्र उद्योग भूषण पुरस्कार 2026 से सम्मान

औद्योगिक क्षेत्र में उनके योगदान, व्यवसाय के विस्तार, रोजगार निर्माण, शासन को आर्थिक योगदान, सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता और कठिन परिस्थितियों में भी निरंतर आगे बढ़ने की उनकी यात्रा को देखते हुए "**महाराष्ट्र उद्योग भूषण पुरस्कार 2026**" श्री बाबुराव नारायण राणे के कार्य और उद्यमिता सफर के सम्मान का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

उनकी कहानी केवल एक सफल व्यवसायी की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास की कहानी है कि सीमित परिस्थितियों से

शुरुआत करने वाला व्यक्ति भी अपनी मेहनत और दृढ़ संकल्प के बल पर एक मजबूत व्यवसायिक पहचान बना सकता है।

मेहनत से मिली दिशा, परिवार से मिला संबल

श्री बाबुराव नारायण राणे के जीवन की सफलता के पीछे संघर्ष और मेहनत के साथ-साथ उनके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पिता से मिली आत्मनिर्भरता की प्रेरणा, मां के आशीर्वाद, पत्नी की हर परिस्थिति में साथ देने वाली भूमिका और बड़े भाइयों के सहयोग ने उनके सफर को मजबूती दी।

आज उनका व्यवसाय जिस स्तर तक पहुंचा है, वह वर्षों की मेहनत, धैर्य, नियोजन और बदलती परिस्थितियों के साथ स्वयं को ढालने की क्षमता का परिणाम है।

श्री बाबुराव नारायण राणे की उद्यमिता यात्रा यह संदेश देती है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों, यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, मेहनत निरंतर हो और अपने प्रयासों पर विश्वास कायम रहे, तो संघर्ष को सफलता की मजबूत नींव मे बंदला जा सकता है।

इसी प्रेरणादायी उद्यमिता, औद्योगिक योगदान, रोजगार निर्माण और सामाजिक प्रतिबद्धता के सम्मानस्वरूप **महाराष्ट्र उद्योग भूषण पुरस्कार 2026** श्री बाबुराव नारायण राणे की उल्लेखनीय यात्रा को सम्मानित करता है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/admin, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.